श्री गौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थ

प्रत्येक धर्म में अपने महापुरुषों के जीवन से संबंधित स्थानों एवं जीवन-प्रसंग की तिथियों को महत्वपूर्ण माना जाता है। जैन-धर्म में भी तीर्थंकरों के जन्म, दीक्षा, निर्वाण आदि पंच-कल्याणक-तिथियों का बड़ा महत्व है और जहां जहां तीर्थंकरों का जन्म, निर्वाण आदि हुआ उन स्थानों को तीर्थ-भूमि माना जाता है। उसके पश्चात् कई चमत्कारी मूर्तियां जहां जहां स्थापित हुईं उन स्थानों को भी तीर्थों सम्मिलित कर लिया गया। श्री गौड़ीपार्श्वनाथ का तीर्थ भी इसी प्रकार है। गत पांच सौ वर्षों में इस तीर्थ की महिमा दिनोंदिन बढती गई। अनेक ग्राम नगरों में गौड़ी पार्श्वनाथ के मन्दिरों एवं मूर्तियों की स्थापना हुई क्योंकि मूल प्रतिमा जिस स्थान पर थी उसका मार्ग बड़ा विषम था और सबके लिए वहां पहुंचना सम्भव न था। पर इस मूर्ति के चमत्कारों की बड़ी प्रसिद्धि हुई फलतः लोगों की श्रद्धा गौड़ी-पार्श्वनाथ के नाम से बड़ी दृढ़ हो गई। १७ वीं शताब्दि से २० वीं शताब्दि के प्रारम्भ तक कई यात्री-संघ मूल पार्श्वनाथ की प्रतिमा जहां थी उस पारकर देश में बड़े कष्ट उठाकर के भी पहुंचते रहे हैं। पर अब वह तीर्थ लुप्त प्रायः सा हो गया है।

इस तीर्थ की सबसे अधिक प्रसिद्धि प्रीतिविमल रचित "गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन" के कारण हुई, जिसकी रचना संवत् १६५० के आस पास हुई। इस स्तवन का प्रारम्भ "वाणी-ब्रह्मा-वादिनी वाक्य से होता है। इसलिए इस स्तवन का नाम "वाणी ब्रह्मा" के आद्यपद से खूब प्रसिद्ध हो गया और इसे एक चमत्कारी स्तोत्र के रूप में बहुत से लोग नित्य पाठ करने लगे। कई लोग बड़ी श्रद्धा-भक्ति से संध्या समय धूप दीप करके इस स्तवन का पाठ करने लगे। उनका यही विश्वास है कि इसके पाठ से समस्त उपद्रव शान्त होते हैं और मंगला-माला या लीला लहर प्राप्त होती है। इस स्तवन में गौड़ी पार्श्व-नाथ की प्रतिमा के प्रगट होने का चमत्कारिक वृत्तान्त है। यद्यपि ऐसे और भी कई स्तवन समय समय पर रचे गये पर उनकी इतनी प्रसिद्धि नहीं हो सकी। प्रस्तुत लेख में नेम विजय रचित गौड़ी स्तवन के आधार से इस तीर्थ की स्थापना का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

मुनिश्री दर्शन विजयजी आदि त्रिपुटी लिखित "जैन परम्परानु इतिहास" के द्वितीय भाग में गौड़ी तीर्थ का वर्णन भी प्रकाशित हुआ है उसके अनुसार इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा १२२८ में पाटन में कलिकाल-सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी द्वारा हुई थी। पता नहीं इसका प्राचीन आधार क्या है? त्रिपुटी के मतानुसार झिंझुवाड़े के सेठ गौड़ी दास और सोढाजी भाला अपने यहां दुष्काल पड़ने से मालवे गये और वहां से वापिस आते समय रास्ते में सिंह नाम के कोली ने अचानक सेठ को मार डाला। सेठ मरकर व्यन्तरदेव हुआ और अपने घर में स्थित पार्श्वनाथ प्रतिमा का महात्म्य बढाने लगा। अधिष्टायक के रूप में इस प्रतिमा द्वारा कई चमत्कार प्रकट किये अतः सेठ गौड़ी दास के कारण इस पार्श्वनाथ प्रतिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का नाम गौड़ी पार्श्वनाथ हो गया। फिर यह प्रतिमा पाटन में लाई गई और मुसलमानी आक्रमणों के समय सुरक्षा के लिए जमीन में गाड़ दी गई। सम्वत् १४३२ में पाटन के सूबेदार हसनखां की की घुड़शाला में यह प्रतिमा प्रगट हुई और उसकी बीबी उसकी पूजा करने लगी। एक दिन स्वप्न में उसे ऐसी आवाज सुनाई दी कि नगर "पारकर" का सेठ मेघा यहाँ आयेगा, उसे उस प्रतिमा को दे देना। उसके आगे का वृत्तान्त उपरोक्त स्तवन के आधार से आगे दिया जा रहा है। सम्वत् १४३२ में पाटन से राधनपुर होते हुए यह प्रतिमा नगर "पारकर" में मेघाशाह द्वारा पहुंची और १२ वर्ष बाद मेघाशाह को स्वप्न हुआ और उसके अनुसार जिस निर्जन स्थान में यह स्थापित की गई वह गौड़ीपुर नाम से विख्यात हुआ। इसी तरह सं० १४४४ में गौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थ स्थापित हुआ। उसकी प्रसिद्धि १७ वीं शताब्दी से ही अधिक हुई मालूम देती है।

नगर "पारकर" मारवाड़ से सिंध जाते हुए मार्ग में पड़ता है। जंगल या छोटे से गांव में गौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थ था। पाकिस्तान होने के पहले तक वहां के सम्बन्ध में जानकारी मिलती रही। राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के सिंध एवं राजस्थान में प्रचारक श्री दौलतरामजी कुछ वर्ष पूर्व बीकानेर आये थे तो उन्होंने बतलाया था कि वे भी कुछ वर्ष पूर्व वहां गये थे। आस पास में जैनों की बस्ती विशेष रूप न होने के कारण उधर कई वर्षों से उस तीर्थ के सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी प्राप्त नहीं हो रही है अतः गौड़ी पार्श्वनाथ की प्रतिमा और मन्दिर की अब क्या स्थिति है उसकी जानकारी, जिस किसी भी व्यक्ति को हो, प्रकाश में लाने का अनुरोध किया जाता है। ५०० वर्षों तक जो इतना प्रसिद्ध तीर्थ रहा है उसके विषय में कुछ भी खोज नहीं किया जाना बहुत ही अखरता है।

गौड़ी-पार्श्वनाथ-उत्पत्ति

सर्वप्रथम सरस्वती को नमस्कार कर कवि गौड़ी पार्श्वनाथजी की स्तवना उत्पत्ति कहने का संकल्प करता है। पार्श्व प्रभु की जीवनी का संक्षिप्त उल्लेख कर कवि बताता है कि पाटण में गौड़ी-पार्श्वनाथजी की तीन प्रतिमाएं निर्माण कर भूमि-गृह में रखी गई थी। तुर्क ने एक प्रतिमा लेकर अपने कमरे में जमीन के अन्दर गाड़ दी और स्वयं उस पर शय्या बिछाकर शयन करने लगा। एक दिन स्वप्न में यक्षराज ने कहा कि प्रतिमा को घर से निकालो अन्यथा मैं तुम्हें मारुंगा। देखो 'पारकर' नगर से मेघाशाह यहां आवेगा और तुम्हें ५०० टके दे देगा। तुम उसे प्रतिमा दे देना। किसी के सामने यह बात न कहना तो तुम्हारी उन्नति होगी।

'पारकर' देश में भूदेसर नामक नगर था। वहां परमारवंशीय राजा "खंगार" राज्य करता था। वहां १४५२ बड़े व्यापारी निवास करते थे। उन व्यापारियों में प्रधान काजलशाह था जिसका दरबार में भी अच्छा मान था। काजलशाह की बहिन का विवाह मेघाशाह से हुआ था। एक दिन दोनों साले बहनोई ने विचार किया कि व्यापार के निमित्त द्रव्य लेकर गुजरात जाना चाहिये। मेघाशाह ने गुजरात जाने के लिये अच्छे शकुन लेकर प्रस्थान किया। ऊंटों की कतार लेकर बाजार में आया तो कन्या, फूल, छाब लेकर आती हुई मालिन वेदपाठी व्यास, वृषभ-सांड, दधि, नीलकंठ इत्यादि अनेक शुभ शकुन मिले। अनुक्रम से पाटण में पहुंचकर कतार को उतारा। रात को सोये हुए मेघा सेठ को यक्षराज ने स्वप्न में कहा—तुम्हें एक तुर्क पार्श्वनाथ-भगवान की प्रतिमा देगा। तुम ५००) टका नगद देकर प्रतिमा को ले लेना।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मेघासेठ ने प्रातःकाल तुर्क को सहर्ष ५००) टका देकर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा ले ली। २० ऊंट रूई (कपास) खरीदकर उसके बीच प्रभु को विराजमान कर 'पारकर' नगर की ओर रवाना हुआ। जब वे राधनपुर आये तो कस्टम–आफिसर ने ऊंटों की गिनती में कमीबेशी की भूल होते देख आश्चर्यपूर्वक पूछा। मेघा सेठ से पार्श्व प्रतिमा का स्वरूप ज्ञातकर दाणी लोग लौट गए। संघ प्रभु के दर्शन कर आनन्दित हुआ। अनुक्रम से पारकर पहुंचने पर श्री संघ ने भारी स्वागत किया। फिर सं० १४३२ मि० फाल्गुण सुदी २ शनिवार के दिन पार्श्वनाथ भगवान की स्थापना की गई।

एक दिन काजलशाह ने मेघाशाह को पूछा कि आप मेरा द्रव्य लेकर गुजरात गये थे उसका हिसाब कीजिये। मेघा सेठ ने कहा ५००) टका तो भगवान के लिये दिये गये हैं। काजल सेठ ने कहा—इस पत्थर के लिए क्यों खर्च किया? मेघा ने कहा :—हिसाब करें तब ५००) टका को मेरे हिसाब में भर लीजियेगा।

मेघाशाह की धर्मपत्नी का नाम मृगावती था। महिओ और मेहरा नामक दो पुत्र थे। मेघा ने धनराज को भी प्रतिदिन प्रभु की पूजा की प्रेरणा दी। इसके बाद एक दिन स्वप्न में यक्षराज ने मेघाशाह से कहा—कल प्रातःकाल यहां से चलना है। भावल चारण की बहली (रथ) और रायका देवानन्द के दो बैल मंगाकर प्रभु को विराजमान कर तुम स्वयं बहली हांकते हुए अकेले चलना। बांडा थल की ओर बहली हांकना।

प्रातःकाल मेघाशाह ने यक्षराज के निर्देशानुसार बांडाथल की ओर प्रयाण किया। बांडाथल की भयानक अटवी में मेघाशाह भूत-प्रेतादि से जब भयभीत हुआ तो यक्षराज ने उसे कहा निश्चिन्त रहो।

जब बहली गौड़ीपुर गांव के पास आई तो एकाएक रुक गई। निर्जल और निर्जन स्थान में सेठ अकेला चिन्तातुर होकर सो गया। यक्षराज ने कहा—दक्षिण दिशा में जहां नीला छाण पड़ा हो वहां अखूट जल प्रवाही कुआ निकलेगा। पाषाण की खान निकलेगी। चावल के स्वस्तिक के स्थान में कुआ खुदवाना एवं सफेद आक के नीचे द्रव्य भंडार मिलेगा। सिरोही में शिल्पी मिलावरा रहता है जिसका शरीर रोगाक्रान्त है। तुम उसे यहां लाना और प्रभु के न्हवण जल से वह निरोग हो जायगा।

सेठ ने शुभ मुहूर्त में मन्दिर का काम प्रारम्भ किया। यक्ष के निर्देशानुसार जमीन खुदवाकर द्रव्य प्राप्त किया। गौड़ीपुर गांव बसाकर अपने सगे सम्बन्धियों को वहां बुला लिया। एक दिन काजल सेठ ने वहां आकर मेघा से कहा कि इस कार्य में आधा भाग हमारा है। मेघा ने कहा कि हमें आपके द्रव्य की आवश्यकता नहीं है। प्रभु कृपा से हमें द्रव्य की कोई कमी नहीं है। आप तो कहते थे कि पत्थर क्या काम का है! काजल सेठ की दाल न गलने से वह क्रुद्ध होकर लौट गया और मन में वह मेघा की घात सोचने लगा। उसने मन में सोचा कि पुत्री के व्याहोपलक्ष में सब न्यात को जिमाऊंगा और फिर अवसर पाकर मेघा का प्राण हरण कर स्वयं शक्तिशाली हो जाऊंगा। और फिर मन्दिर बनवाने का पूर्ण यश मुझे मिल जायगा। उसने पुत्री मांडा और मेघाशाह को भी निमंत्रित किया। मेघा के जिनालय बनवाने का काम जोर शोर से चल रहा था अतः उसने स्वयं न जाकर अपने परिवार को भेज दिया। मेघा के न आने पर काजल ने कहा कि मेघाशाह के बिना आये कैसे काम चलेगा। उसने स्वयं गौड़ीपुर जाकर मेघा को लाने का निश्चय किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यक्ष ने मेघा से कहा कि काजलशाह तुम्हें ले जाने के लिए आ रहा है। उसके मन में तुम्हारी घात है। तुम वहां मत जाना। वह तुम्हें दूध में जहर पिलाकर मारने का षडयंत्र कर रहा है। यक्ष के जाने के बाद काजलशाह मेघा के पास आया और नाना प्रकार से प्रेम प्रदर्शित कर हठ करके अपने गांव मुदेसर ले गया। विवाह और जातिभोज का काम निपट जाने पर काजल ने अपनी स्त्री को संकेत कर दिया कि जब हम दोनों एक साथ जीमेंगे, तुम दूध में विष मिलाकर दे देना। स्त्री ने कहा—मेघा को मत मारिये, अपने कुल में कलंक लगेगा। स्त्री ने लाख समझाया पर मन और मोती टूटने पर नहीं मिलता। काजल और मेघा दोनों साथ जीमने बैठे। स्त्री ने दूध लाकर दिया। काजल ने कहा मुझे दूध पीने की सौगन्ध है। मेघा ने दूध पिया और पीते ही शरीर में विष फैल गया और उसका देहान्त हो गया। सर्वत्र काजल की अपकीर्ति हुई। मिरणादे और महिओ, मेहरा विलाप करने लगे।

मेघा की अंत्येष्टि करके काजल ने अपनी बहिन को समझा बुझाकर शान्त किया। काजलशाह ने जिनालय को पूरा कराया। जब शिखर स्थिर न हुआ तो काजलशाह चिन्तित हो गया। दूसरी बार भी शिखर गिर गया तो यक्षराज ने महिओ को स्वप्न में कहा कि तुम शिखर चढ़ाना, स्थिर रहेगा। मेघा के हत्यारे काजल को यश कैसे मिलेगा ? यक्षराज की आज्ञानुसार महिओ ने शिखर चढ़ाया संघ आया, प्रतिष्ठा हुई, चमत्कारी तीर्थ की सर्वत्र मान्यता हुई।

गौड़ी पार्श्वनाथ के प्रगटन व सवारी का चित्र लगा हुआ है। परिचय प्रस्तुत है—

गौड़ी पार्श्वनाथजी–यह चित्र ३१ × ३० इन्च माप का है। इसके मध्य में सात सूंड वाले हौदा युक्त श्वेत गजराज पर भगवान की प्रतिमाजी विराजमान है। पास में प्रकट होने का उल्लेख है। उभय पक्ष में नरनारी वृन्द अपने हाथ में कलश व पूजन सामग्री लिए उपस्थित है। चित्र के ऊपरी भाग में मेघ घटाओं से ऊपर छः विमान हैं जो अश्वमुखी, गजमुखी हंसमुखी आदि विभिन्न रूपों मेंहैं और २-२ देव उनमें बैठे हुए पुष्प वर्षा कर रहे हैं। चित्र के निम्न भाग में तम्बूडेरा–कनातें लगी हुई हैं।

इस चित्र के परिचय स्वरूप बोर्ड में निम्नांकित अभिलेख है।

"गौड़ी पार्श्वनाथ स्वामी प्रगट हुआ तिसका भाव"

"कलम गणेश मुसवर की मुकाम जयपुर शहर कलकत्ता में बनी।"

"सम्वत् १९२५ मिति कार्तिक सुदि १५ वार शनि श्रीमाल ज्ञाती फोफलिया रीधुलाल तत् पुत्र शिखरचन्द्रेन कारापितम"

श्री नेमविजय कृत

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

भाव धरी भजना करुं, आपे अविचल मत।
लघुता थी गुरुता करै, तूं सारद सरसत्ति ॥ १ ॥
मुझ ऊपर माया धरो, देजो दोलत दान।
गुण गावुं गोड़ी तणा, भवे भवे भगवान् ॥ २ ॥
धवल धींग गौड़ी धणी, सहु को आवै संग।
महिमदा वादें मोटको, नारंगो नवरंग ॥ ३ ॥
प्रतिमा त्रणे पास नी, प्रगटी पाटण मांहि।
भगत करे जे भविजनां, कुण ते कहिवाय ॥ ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उतपत तेहनी उचरूं, शास्त्र तणी करूं साख।
मोटा गुण मोटां तणा, भाखै कविजन भाख ॥ ५ ॥

ढाल—१ नदी यमुना के तीर उडै दोय पंखिया—ए देशी

कासी देश मभार के नगरी बणारसी ।
तेह समोवड़ कोय नहीं लंका जसी ॥
राज करे तिहां राज के अश्वसेन नरपती ।
राणी वामा नाम के तेहनें दीपती ॥ १ ॥

जनम्या पास कुमार के तेहनी राणीइं ।
उच्छव कीधो देव के इन्द्र इन्द्राणीइ ॥
जोवन परण्या प्रेम कन्या प्रभावती ।
नित नित नव नवा वेस करी नि देखावती ॥ २ ॥

दीक्षा लेई वनवास रहना काउसग तिहां ।
उपसर्ग करवा मेघमाली आव्यो तिहाँ ॥
कष्ट देई नि तेह गयो ते देवता ।
पाम्यो केवलग्यान आवी सुरनर सेवता ॥ ३ ॥

वरस ते सो नो आउषू भोगवि ऊपना ।
जोत मांहि मली ज्योत इहां कांइ क रूपना ॥
पाटण मांहि मूरत त्रणे पासनी ।
भरावी मूंइरा मांहि राखी कई मासनी ॥ ४ ॥

एक दिन प्रतिमा तेह गोडी नी लेई करी ।
पोताना आवास मितर के लेई धरी ॥
खाड खणीने मांह घाली तुरके जिहां ।
सुई नित प्रति तेह सज्या वाली तिहां ॥ ५ ॥

एक दिन सूहणा मांहि आवीने इम कहै ।
तेण अवसर तुरक हीया मांहि सरदहै ॥
नहीं तर मारीस मरडीस हवि हूं तूझ नै ।
ते माटें घर मांह थी काढ तूं मूझ नै ॥ ६ ॥

पारकर मांह थी मेघो सा इहां आवस्यै ।
ते तुझ देस्यै टंका पांचस्यै साथे लावस्यै ॥
देजे मूरति एह काढी नै तेहनै ।
मत कहिजें कोई आगल वात तुं केहनै ॥ ७ ॥

थास्ये कोड़ कल्याण के ताहरें आज थी
वाधस्यै पाचां मांहि के नामि लाज थी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनसूं बीहनो तूरकडो थाये आकलो
आगल जे थाइं वात भवि जन सांभलो ।। ८ ।।

ढाल—२ देशी १ मांहरा घणुं सवाई ढोला ।
२खंभाईत देशे जाजो, खंभाईति चुडला लाइजोरे मांहरां सगबरू

लाख जोयण जंबु परमाण, तेमां भरत खेत्र परधान रे ।
माहरा सुगण सनेही सुणज्यो ।
पारकर देस छैं रूडो, जिम नारि नैं शोभे चूडो रे ।।मां०।।१।।
शास्त्र मांहि जिम गीता, तिम सतीयां मांहि जिम सीता रे ।।मां०।।
वाजित्र मांहि जिम भेर, तिम परबत मांहि मोटो मेर रे ।।मां०।।२।।
देव मांहि जिम इंद, ग्रहगण मांहे जिम चंद रे ।।मां०।।
बत्रीस सहिस तिहां देस (भूछे) तेमां पारकर देस विसेस रे ।।मां०।।२।।
भूधेसर नांमि नयरी, तिहां रहिता नथि कोइ वेरी रे ।।मां०।।
तिहां राज करे खंगार, तेतो जात तणो परमार रे ।।मां०।।४।।
तिहां वणज करै रे व्यापारी, तसु अपछर सिरखी नारी रै ।।मां०।।
मोटा मंदिर परधाम, तेतो चवदैसे बावन रे ।मां०।।।५।।
तिहां काजल सा व्यवहारी, सहु संघ में छें अधिकारी रे ।।मां०।।
ते पुत्र कलित्र परिवार, तसु मानत छै दरबार रे ।।मां०।।६।।
ते काजल सा नी रे बाई, सा मेघो कीधो जमाई रे ।।मां०।।
एक दिन सालो बिनोइ, बैठा वात करंता एहवी रे ।।मां०।।७।।
इहां थी धन धणो लेइ, जइ ल्यावो वस्तु केइ रे ।।मां०।।
गुजरात मांहे तुम जाज्यो, जिम लाभ आवै ते लाज्यो रे ।।मां०।।८।।

ढाल—३ पांचम तप भणु रे—ए देशी

सा काजल कहै वात, मेघा भणि दिन रात, सांभली सद्द है ए, वलतुं इम कहै ए
जाइस हूं परभात, साथ करी गुजरात, सुकन भला सही ए, तो चालुं वही ए ।।१।।
धन घणो लेई हाथ, परिवारी करि साथ, कंकु तिलक कीयो ए, श्रीफल हाथ दीयो ए ।
लेई ऊंट कतार, आव्यो चोहटा मझार, कन्या सनमुख मलीए, करती रंगरूली ए ।।२।।
मालण आवी जाम, छाब भरी छै दाम, वधावै सेठ भणी ए, आसीस आपे धणी ए ।
मच्छ जुगल मल्यो खास, वेद बोलंतो व्यास, पत्र भरी जोगणी ए, वृषभ हाथे धणी ए ।।३।।
डावो बोलै सांड, दधि नुं भरीउ भांड, खर डावौ खरोए,................................ ।
आगल आव्या जाम, मारग बूठा ताम, भेरव जिमणी भली ए, देव डावी वली ए ।।४।।
जिमणी रूपा रेल, तार वधी तेहनी वेल, नीलकंठ तोरण कीयो ए, उलस्या अती हीयो ए ।
हनुमंत दीधी हाक, मधुरो बोले काग; लोक कहै सहु ए, काम होस्यै बहु ए ।।५।।
अनुक्रम चाल्या जाय, आव्या पाटण मांहि, उतारा भला किया ए, सेठजी आविया ए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसि भर सूता जाँह, जक्ष आवी नें त्यांह, सुहणे इम कहै ए, सघलुं सरदहै ए ।।६।।
तरक तणैं छे धाम, तेह नै घर जइ ताम, पांचसैं रोकड़ा ए, देजे दोकड़ा ए ।
देसे प्रतिमा एक, पास तणी सुविवेक, तेह थी तुझ थास्ये ए, चिंता दूर जास्यै ए ।।७।।
संभलावी जक्षयराज, तुरक भणी कहै साज, प्रतिमा तुं देजे ए, पांच से धन लेजे ए ।
इम करतां परभात, तुरक भणी कहै वात, मन मां गहगह्या ए, अचरज कुण लहै ए ।।८।।

ढाल—४ आसण रा रे जोगी, ए देशी

तरक भणी दियै पांच सैं दांम, प्रतिमा आणी ठाम रे । पासजी मुने तूठा
पुजे प्रतिमा हरख भराणो, भाव आणी नें खरचो नाणो रे । पासजी मुने तूठा ।।१।।
मुझ वखते ए मूरत आवी, मूने आपस्यैं दाम उपावी रे ।पा०।
दाम देई निरू तिहां लीधु, मन मान्यु कारज कीधु रे ।पा०।।२।।
रूना भरीया ऊंटज वीस, ते मांहि बैसारया जगदीस रे ।।पा०।।
अनुक्रमे चाल्या पाटण मांहि थी, साथैं मूरत लेइ नैं तिहाँथी रे ।।पा०।।३।।
मली सहु दाणी विचारैं मन में, एतो कोतक दीसैं इण में रे ।।पा०।।
मेघा सा नैं दाणी पूछै, कहो सेठ जी कारण स्यूं छै रे ।।पा०।।४।।
आगल राधणपुर सहु आव्या, दांण लेवा दाणी मिली आव्या रे ।।पा०।।
गणे गणे उंट नैं भूलैं भूलैं लेखूं, एक ओछो अेक अधिको देखूं रे ।।पा०।।५।।
सा मेघो कहै सांभल दांणी, अमे मूरत गोडीजी नी आणी रे ।।पा०।।
ते मूरत ए बरकी मांहे, किम जालवीए बीजे ठामी रे ।।पा०।।६।।
पारसनाथ तणैं सुपसाइं, दाण मेली दाणी घर जाये रे ।।पा०।।
जात्रा करीनि सहु घर आवैं, जिन पूजी नैं आणंद पावै रे ।।पा०।।७।।
तिहां थी आव्या पारकर मांहे, भूधेसर नगर छै ज्यांही रे ।।पा०।।
वधामणी दीधी जिण पुरषैं, थया रूलियाइत घणु हरखै रे ।।पा०।।८।।

ढाल—५ राणपुरो रलयामणो रे लाल

संघ आवैं मली सामठा रे लाल, दरसण करवा काज; भवि प्राणी रे ।
ढोल नगारा ढल ढलै रे लाल, नादे अंबर गाज ।भ०।।१।।
सुणजो बात सुहामणी रे लाल ।
उछव महोछव करे घणा रे लाल, भेट्या श्री पारसनाथ ।भ०।
पूजा प्रभावना करे घणा रे लाल, हर्ष पाम्या सहु साथ ।भ०।।२।।सु०।।
संवद चउदै बत्रीस में रे लाल, कात्तिक सुद नी बीज ।भ०।
थावर वारे थापीया रे लाल, नरपति पाम्या रीझ ।भ०।।३।।सु०।।
एक दिन काजलसा कहै रे लाल, मेघासा नै वात ।भ०।
नाणुं अमारूं लेई करी रे लाल, गया हुंता गूजरात ।भ०।।४।।सु०।।
ते धन तुमे किहां वावरचुँ रे लाल, ते दयो लेखो आज ।भ०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब मेघो कहै सेठजी रे लाल, खरच्या धर्म नै काज ।भ०।।५।।सु०।।
सामीजी माटै सूंपीया रे लाल, पांच सै दीधा दाम ।भ०।
काजल कहै तुमे स्यूं कर्युं रे लाल, ए पथर कुंण काम ।भ०।।६।।सु०।।
काजल भणी मेघो कहै रे लाल, ए व्यापार ग्रम भाग ।भ०।
ते पांच सै सर माहरै रे लाल, तेमां नहीं तुम लाग ।भ०।।७।।सु०।।
मेघासानी भार्या रे लाल, मृघा दे छे नाम ।भ०।
महीयो नै मेरो ए बे सारिखा रे लाल, बहु सुत रति ग्रति काम ।भ९।।८।।सु०।।

ढाल—६ कंत तमाखू परहरो, ए देशी

सा काजल मेघा भणी, बेहुं जग मि संवाद । मोरा लाल
तिहां मेघो धनराज नै, एक दिन दीधो साद । मोरा लाल सुणजोबात सुहामणी।।१।।
ग्रा प्रतिमा पूजो तुमे भाव ग्राणी नि चित्त ।मो०।
बार बरस मेघे तेहनै, पूजी प्रतिमा नित्य ।मो०।
एक दिन सुहणै इम कहै, मेघा सा नै बात ।मो०।
तु ग्रम साथै ग्रावजे, परवारी परभात ।मो०।।३।।सु०।।
वहिल लेजे भावल तणी, चारण जात छे जेह ।मो०।
देवाणंद रायका तणी, दोय वृषभ छै तेह ।मो०।।४।।सु०।।
वहिल खेड़े तुं एकलो, मत लेजे कोई साथ ।मो०।
बांडा थल भणी हाकजे, मुझ नै राखजे हाथ ।मो०।।५।।सु०।।
इम मेघा ने प्रीछवी, यक्ष गयो निज ठाम ।मो०।
रवि ऊग्यो मेघो तिहां, करवा मांड्यो काम ।मो०।।५।।सु०।।
वहिल लीधो भावल तणी, वृषभ ग्राण्या दोय ।मो०।
जोतरी वैहिल स्वामी तणी, जाणै छै सब कोय ।मो०।।७।।सु०।।
तब मेघो ते वहिलनि, खेड़ी चाल्यो जाय ।मो०।
ग्रनुक्रमे मारग चालतां, ग्राव्या थलवट मांह ।मो०।।८।।सु०।।

ढाल—७ ग्रमली लाल रंगावो वर ना मोलियां, ए देशी

तिहां छोटा नै मोटा थल घणा, तिहां रूंख तणो नहीं पार रे ।
तिहां भूत नै प्रेत व्यंतर घणा, देखी सेठ करै विचार रे ।
सा मेघो रे मन में चिंतवै, कुण करसै मोरी सार रे ।
तब जक्ष ग्रावी ने इम कहै, तुं म कर फिकर लगार रे ।।२।।
तब वैंहल हाकी नै चालीयो, ग्राव्यो ऊझड़ गौड़ीपुर गाम रे ।
तिहां वाव कुबा सरोवर नहीं, नहीं मोहल मंदिर सुठाम रे ।।सा०।।३।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिहां वहिल थंभाणी चालै नहीं, हवै सेठ हुयो दिलगीर रे ।सा०।
मुझ पासै नयी कोई दोकड़ा, कुण जाणै पराई पीड़ रे ।सा०।।४।।

तिहां रात पड़ी रवी आथम्यो, चितातुर थइनि सूतो रे ।सा०।
तव जख्य आवी ने इम कहै, सोहणा मांहि एकंतो रे ।सा०।।५।।

हवे सांभल मेघा हुं कहुँ, इहा वास जे गोड़ीपुर गाम रे ।सा०।
माहरो देरासर करजे इहां, उत्तम जोइ कोइ ठांम रे ।सा०।।६।।

तुं जाजे रे दक्षण दस भणी, तिहां पड्यूं छै नीलू छांण रे ।सा०।
तिहां कुओ उमटसी पाणी तणो, परगटसै पाहाणारी खाण रे ।सा०।।७।।
पासै ऊग्यो छै उज्वल आकड़ो ते हेठल छै धन बहुलो रे ।सा०।
तिहां पूरचो छै चोखा तणो साथीयो, वली पाणी तणो कुयो पहोलो रे ।सा०।।८।।

ढाल—८ सीता तो रूपे रूड़ी, एहनी देशी

सीलावट सीरोही गामैं तिहां रहै छै चतुर छै कामै हो ।सेठजी सामलो ।
रोग छै तेह नै शरीरे, नमणुं करी ने छांटो नीरे हो ।से०।।१।।

रोग जास्यै नै सुख थास्यै, बैठो इहां काम कमास्यै हो ।से०।
जोतिक निमत्त जोरावै, देरासर पायो मंडावै हो ।से०।।२।।

जख्य गयो इम कही नै, करो उद्यम सेठ जी वही ने ।से०।
सिलावट्ट नै तेड़ावै, वली धन नी खाण खणावै हो ।से०।।३।।

गोड़ीपुर गाम वसावै, सगा साजन नै तेड़ावै हो ।से०।
इम करतां बहु वीता, थया मेघो जगत्र वदीता हो ।से०।।४।।

एक दन काजलसा आवी, कहै मेघा नै वात बनावी हो ।से०।
ए कामैं भाग अमारो, अर्ध मारों अर्ध तमारो हो ।से०।।५।।

ईम करी देरासर करीयै, जिम जग में जस वरीयै हो ।से०।
तब मेघो कहै तेहनै, दाम जोइ छै केहनै हो ।से०।।६।।

सांमीजी सुपसायै, घणा दाम छै वली इहांइहो ।से०।
एक दिन कहिता तुमे आंम, ए पथर छै कुण काम हो ।से०।।७।।

क्रोध वसे पाछो वलीयो, आपण मांदर मां भलीयो हो ।से०।
सा काजल मनचिंतै, मारूं मेघो तो थाऊं नचिंतो हो ।से०।।८।।

ढाल ६ कोइलो परबत धूंधलो रे लाल

परणावुं पुत्री माहरी रे लाल, खरचूं द्रव्य अपार रे ।चतुरनर।
न्यात जीमाडुं आपणी रे लाल, तेडी मेघो तिणवार रे ।च०।।१।।

सांभलजो श्रोता जनां रे लाल ।।आंकणी।।
जो मेघो मारुं सही रे लाल, तो मुझ उपजै करार रे ।च०।

देवल करावुं हुं भली रे लाल, तो नाम रहै निरधार रे।च०।।२।।सां।।
इम चिंतवी वीवाह नुं रे लाल, करै कारिज ततकाल रे।च०।

सांजन नै तेड़ाव नै रे लाल, गोरीश्रो गावै धमाल रे।च०।
सा मेघा भणी नुतरुं रे लाल, मोकलै काजल साह रे।च०।
वीवाह उपर आवज्यो रे लाल, अवस करी नै इहांम्र रे।च०।।४।।सा०।।

सांभली मेघो चींतवै रे लाल, किमकरी जइयै त्यांह रे।च०।
काम अमारे छै घणु रे लाल, देहरासर नो इहांह रे।च०।।५।।सा०।।

तब मेघो कहै तेहनै रे लाल, तेड़ो जाश्रो परवार रे।च०।
काम मेली नै किम आवीयै रे लाल, जाणो तुमे निरधार रे।च०।।६।।सा०।।

मरघादे नै तेड़नै रे लाल, पुत्र कलत्र परवार रे।च०।
मेघा ना सहु साथ ने रे लाल, तेड़ी आव्या तिणवार रे।च०।।७।।सा०।।

कहै काजल मेघो किहां रे लाल, इहां नाव्या सा माट रे।च०।
मेघा विना कहो किम सरै रे लाल, न्यात तणी ए बात रे।च०।।८।।सा०।।

ढाल १० नंद सलूणा नंदजी रे लो—ए देशी

जक्ष गयोइ मेघा भणी रे लो, हवै ताहरी आवी बनी रे लो।
काजल आवस्यै तेड़वा रे लो, कूड़ करी तुझ बेडवा रे लो।।१।।

तुं मत जाजे तिहां कणे रे लो, झेर देई तुझ नै हणे रे लो।
तेड़े पिण जइसे नहीं रे लो, नमण करी ले इजे सही रे लो।।२।।

दूध मांहि देस्ये खरूं रे लो, नमणु पीधे जास्यै परू रे लो।
ते माटे तुझ नै घणुं रे लो, मान वचन सोहामणुं रे लो।।३।।

जक्ष गयो कही तेहवै रे लो, काजल आव्यो एहवै रे लो।
कहै मेघा निसांभलो रे लो, आवी मेलो मन आवलो रे लो।।४।।

तुम आव्यां बिना किम सरै रे लो,, न्यात में सोभीयै किण परै रे लो।
तुम सरीखा आवै सगा रे लो, तो अमनै थायै उमगा रे लो।।५।।

हुं आव्यो धरती भरी रे लो, तो किम जाऊं पाछो फरी रे लो।
जो अमनि कांइ लेखवो रे लो, आडो अवलो मत देखवो रे लो।।६।।

हठ लेई बैठा तुम रे लो, खोटी थइयै छै हवै अमे रे लो।
सा मेघो मन चींतवै रे लो, अति ताण्यो किम पूरवै रे लो।।७।।

काजल साथ चालियो रे लो, भूधेसर मांहे आवीया रे लो।
नमणुं विसारयुं तिहां कणै रे लो, भविस पूरण अखी बण्यी रे लो।।८।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल–११ काधल मत चालो, ए देशी

न्यात जीमाड़ी आपणी, देई नें बहुमान ।
वर कन्या परणाविया, दीधा बहुला दान ।।१।।

काजल कहै नारी भणी, मेघो अमे भेला ।
जिमण देज्यो विष भेलनै, दूध में तिण वेला ।।२।।

दूध तणी छै आखड़ी, तुमनै कहिसहुँ रीस ।
मेघा नै मेलवु नहीं, प्रीसु जिमण जिमेस ।।३।।

तब नारी कहै प्रिउजी, मेघो मत मारो ।
कुल में लंछण लागसी, जास्यै पांच मि कारो ।।४।।

काजल तो मानै नहीं, नारी कही नै हारी ।
मन भांगो मोती ज्यु, तेहनै न लागै कारी ।।५।।

इम सीखवी निज नारि नै, जमवा बिहुँ बैठा ।
भेला एकण थाल में, हीयो हरखी नै हेठा ।।६।।

दूध आण्यो तिण नारीयै, प्रीस्यो थाली मांहि ।
काजल कहै मुझ आखड़ी, पीधो मेघा साहि ।।७।।

मेघा नै हवै तत खणै, विष व्याप्यो अंग ।
सासो सास रमी गयो, पाम्यो गति सुरंग ।।८।।

ढाल–१२ किहां रे गुणवंती माहरी जोगणी रे—ए देशी

आवी मरघादे प्रीउनै देखनै रे, रीति कहै तिणवार रे ।
महिओ नै मेरो ते पिण बिहुँ जणारे, अति घणु करै पोकार रे ।।१।।

फिट फिट रे कुलहीणा पापी स्यु कयुं रे, नवि लाज्यो तु लगार रे ।
मुंह किम देखाड़िस लोक में रे, धिग धिग तुझ अवतार रे ।।२।।फि०।।

वीरा तें नवि जाण्यु मन में एहवु रे, ताहरी भगनी नो कुण सलूक रे ।
माहरे तो क्रम ए छाज्यु नहीं रे, पड़ी दीसै छै मुझमि चूक रे ।।३।।फि०।।

एहवा किम लखीया छठी औ अखरारे, तो हवै दीजै किण नें दोस रे ।
निरधारी मेली गयो नाहलो रे, मुझ नै किणही न कीधो रोस रे ।।४।।फि०।।

इम विलवंती मरघा दे कहै रे, वीर तें तोड़ी माहरी आस रे ।
तुझ नै कांइ उकल्यु एहवु रे, जीवीस तीन पांचास रे ।।५।।फि०।।

कुड करी नै तुझ नें चेतरी रे, कीधो तें मोटो अन्याय रे ।
माहरा नानकड़ा बेंहुँ बालुड़ा रे, केनै मिलस्यै जइनै धाय रे ।।६।।फि०।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधविच रह्या देहरा आज थी रे, जग मां नाम रह्यो निरधार रे।
नगरी में बात घर घर विस्तरी रे, सहु को ना दिल मिं आव्यो खार रे ॥७॥फि०॥
द्वेष राखी नें मेघो मारीयो रे, ए तो काजल कपट भंडार रे।
मन नो मैलो दीठो एहवो रे, इम बोलै छै नर नै नार रे ॥८॥फि०॥

ढाल–१३ पूरब पुण्ये पामियै–ए देशी

बेहनी अगनि दाह देइ करी, आव्या सहु निज ठाम हे। बैहनी
काजल कहै तुं मत रोए, न करु एहवुं काम हे।ब०॥१॥
लेख लख्यो ते लाभीयै, दीजै किण नै दास हे बै०
जनम मरण हाथे नथी, खोटी माया जाल हे बै० ॥२॥ले०॥
एह संसार छै कारमो, खोटी माया जाल हे बै०
एक आवे ठाली भरी, जेहवी अरट नी माल हे बै० ॥३॥ले०॥
सुख दुख सरज्यां पामियै, नहिं छै कोई नै हाथ हे बै०
म कर फिकर तुं आज थी, बहुली आंपने आथ हे बै० ॥४॥ले०॥
खाओ पीयो सुख भोगवो, न करो चिंत लगार हे बै०
जे जोइ इं ते मुझनै कहो, न करो दिल में विचार हे बै० ॥५॥ले०॥
जिन नो प्रसाद करावियुं मितस राखीसुं माम हे बै०
इजत आंपण कर तणी, खोसुं किम करि नाम हे बै० ॥६॥ले०॥
सोढां नें हाथे सुंपीसुं, गौड़ीपुर ए गाम हे बै०
चालो आंपण सहु तिहां, हुं लेई आवुं नाम हे बै० ॥७॥ले०॥
अनुक्रम आव्या सहु मली, गौड़ीपुर गाम मझार हे बै०
जिन नो प्रसाद करावियौ, काजल सा तिण वार हे बै० ॥८॥ले०॥

ढाल–१४ करेलडां घड़ दे रे–ए देशी

देहरै सखर भढावीयो, थर न रहै तिण वार।
काजल मन मां चिंतवै, हवै कुण करवो प्रकार ॥१॥
भविक जन सांभलो रे, मुंकी मन नो आंमलोरे ॥भ०॥आंकणी॥
बीजी वार चढावीयो, पडै हेठो ततकाल।
सोहणा मां जक्ष आविनै, कहै मेरा नै सुविसाल ॥भ०॥१॥
तुं चढावे जाय नै थिर रहस्यै सर तेह।
काजल नें जस किम होवै मेघो मार्यो तेह ॥भ०॥३॥
मेरें सखर चढावियौ, नांम राख्यो जग मांहे।
मूरत थापी पासनी, संघ आवै उच्छाह ॥भ०॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवत चवद चौमाल मां, देहरै प्रतिष्ठा कीध ।
महियो मेरो मेघा तणा, तिण जग मांहे जस लीध ।।भ०।।४।।

देसी प्रदेसी घणा, आवै लोक अनेक ।
भाव धरी भगवंत ने, वांदे अधिक विवेक ।।भ०।।६।।

खरचै द्रव्य घणा विहां, राउ राणा तिण वार ।
मानत मानै लाखनी, टालै कष्ट अपार ।।भ०।।७।।

निरधणीआनै धन दियै, अपुत्रियां नै पुत्र ।
रोग निवारै रोगीआ, टालै दालिद्र दुख ।।भ०।।८।।

ढाल–१५ घर आवोजी आंबो मोरीयो–ए देशी

आज अम घर रंग व धामणा, आज तूठा श्री गौड़ी पासो ।
आज चिंतामण आवी चढ्यो, आज सफल फली मन आसो ।।आ०।।१।।

आज सुरतरु फल्यो आंगणे; आज प्रगटी मोहन वेलो ।
आज विछडीया वाहला मिल्या, आज अम घर हुई रंग रेलो ।।आ०।।२।।

आज अम घर आंबो मोरीयो, आज बूठो सोवन धार ।
आज दूधे बूठा मेहला, आज गंगा आवी घर बार ।।आ०।।३।।

श्रीहीर विजय सूरीश्वरू, तस शुभ विजय कवि सीस ।
तेहना भाव विजै कवि दीपता, तेहना सीध नमु निशदीसो ।।आ०।।४।।

तेहना रूप विजै कविराय ना, तेहना कृष्ण नमुं करजोड़ि ।
वली रंग विजै रंगे करी, हुंतो प्रणपत करुं कर जोड़ि ।।आ०।।५।।

आज गायो श्री गौड़ीपुर धणी, श्री संघ केरै पसाय ।
चतुर चौमासूं कीधूं चुंप सुं, गामते महियल मांह ।।आ०।।६।।

संवत अठारै सतलोत्तरे, भाद्रवा मास उदार ।
निथ तेरस चन्द्रवास रै इम नेम विजय जै जैकार ।।आ०।।७।।

इति श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी स्तवनम् संपूर्णम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org